

दैनिक

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त

R

मुंबई हलचल

अब हर सच होगा उजागर

संक्रमण से मौत के मामले में चीन से आगे निकला भारत

नई दिल्ली। देश में कोरोनावायरस से मरने वालों की संख्या 4975 हो गई। भारत ने इसी के साथ मौतों के मामले में चीन को पीछे छोड़ दिया है। चीन में कोरोना संक्रमण से अब तक 4634 लोगों की जान जा चुकी है। शुक्रवार को देश में रिकॉर्ड 264 संक्रमितों की मौत हुई। इनमें महाराष्ट्र में 116, दिल्ली में 82 और गुजरात में 20 मरीजों की जान गई। इसके अलावा तमिलनाडु में 9, राजस्थान में 2, पश्चिम बंगाल में सात लोगों की जान गई। (शेष पृष्ठ 5 पर)

महाराष्ट्र में अब तक 2098 मरीजों की जान गई, गुजरात में 980 संक्रमितों की मौत हुई

देशभर में...

4975

मौतें



॥ शुभ लाभ ॥
MIX MITHAI

- मोतीचूर लड्डू • काजू कतरी • काजू रोल
- बदाम बर्फी • मलाई पेड़े • रसगुल्ले

MM MITHAIWALA
Malad (W) Tel. : 288 99 501

अब 11 अंको का होगा आपका मोबाइल नंबर

ट्राई ने शुक्रवार को एक प्रस्ताव पेश किया है। इस प्रस्ताव में देश में देश में 11 अंको के मोबाइल नंबर को इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है। ट्राई का मानना है कि ऐसा करने से देश में मोबाइल नंबर की क्षमता बढ़कर 1000 करोड़ हो जाएगी।



संवाददाता

नई दिल्ली। अब आपका मोबाइल नंबर 11 अंको का हो सकता है। टेलिकॉम रेग्युलेटरी ऑफ इंडिया (ट्राई) ने शुक्रवार को एक प्रस्ताव पेश किया है। इस प्रस्ताव में ट्राई ने देश में 11 अंको के मोबाइल नंबर को इस्तेमाल करने का सुझाव दिया है। ट्राई के मुताबिक 10 अंको वाले मोबाइल नंबर को 11 अंको वाले मोबाइल नंबर से बदलने पर देश में ज्यादा नंबर उपलब्ध हो पाएंगे।

11 साल के निचले स्तर पर देश की

GDP



राहत पैकेज का फायदा नहीं: बीते दिनों कोरोना संकट को देखते हुए मोदी सरकार ने करीब 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज का ऐलान किया था। देश के सामने इस पैकेज का ब्यौरा वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण रख चुकी हैं। लेकिन तमाम रेटिंग एजेंसियों को अनुमान है कि इस राहत पैकेज से जीडीपी को कोई फायदा नहीं होगा। इस पैकेज का अधिकतर हिस्सा क्रेडिट स्कीम की तरह है। ऐसे में इससे इकोनॉमी में कोई उत्साह नहीं आएगा।

इकोनॉमी में 2009 की मंदी जैसा माहौल

नई दिल्ली। साल 2009 की बात है, कांग्रेस की अगुवाई वाली यूपीए सरकार दोबारा सत्ता में आई थी। इसी साल वित्त वर्ष 2008-09 के जीडीपी आंकड़े जारी किए गए। इन आंकड़ों से पता चला कि वित्त वर्ष 2008-09 (अप्रैल से मार्च) में देश की जीडीपी यानी विकास दर 3.09 फीसदी रही। जीडीपी के इन आंकड़ों पर वैश्विक मंदी का साया था। (शेष पृष्ठ 3 पर)

संपादकीय

बढ़ती लड़ाई

आज कोरोना संक्रमण के आंकड़े जितनी चिंता पैदा कर रहे हैं, उससे कहीं बड़ी चुनौती भी दर्शा रहे हैं। जो भारत दो महीने पहले कोरोना संक्रमण में दुनिया में चालीसवें स्थान पर भी नहीं था, वह नौवें स्थान पर पहुंच गया है, तो हमें न केवल पीछे, बल्कि आगे की ओर भी ज्यादा मुस्तैदी व चौकसी से देख लेना चाहिए। कहीं न कहीं कुछ कमी रह गई, जिसका आकलन हमारी निगाहों में आने से छूट गया। ऐसी कौन-सी रियायत, कौन-सी मजबूरी थी, जिसने हमें संक्रमण की ओर बढ़ाया? और अब तो यह सवाल सताने लगा है कि विशाल आबादी वाला भारत जब नौवें स्थान पर पहुंच गया है, तो कोरोना की यात्रा का समापन कहाँ होगा? अभी और कितने दुख लिखे हैं और अभी खुशी कितनी दूर है? एक दिन में रिकॉर्ड 7,466 मामलों का सामने आना हमें चौंका रहा है, तो हमें अपने आप से भी कुछ सवाल करने पड़ेंगे। क्या हम में से प्रत्येक की कोई न कोई जिम्मेदारी नहीं है? जो लोग सुरक्षित हैं, वे कब तक और किस हद तक सुरक्षित रह पाएंगे? आपदा के समय क्या ऐसे कटु सवाल स्वाभाविक नहीं हैं? ऐसे सवालों से हमें डरना कतई नहीं है, हमें तो जवाब खोजना है और समाधान में अपनी हिस्सेदारी निभानी है। कहीं न कहीं फिजिकल डिस्टेंसिंग से खिलवाड़ हो रहा है। यह बाजारों के खुलने के कारण हुआ है या यात्राओं को मिली मंजूरी के कारण, हमें देखना होगा कि संक्रमण को हम थामने में क्यों नाकाम हो रहे हैं। सार्वजनिक जगहों पर और ऐसी हर जगह पर पूरी कड़ाई बरतने की जरूरत है, जहां लोगों का परस्पर संपर्क हो रहा है। जहां लोग फिजिकल डिस्टेंसिंग के नियम-कायदों की अवहेलना कर रहे हैं? कौन लोग हैं, जो अभी भी फिजिकल डिस्टेंसिंग का महत्व नहीं समझ पाए हैं? हमसे ज्यादा आबादी वाला एकमात्र देश चीन अगर कोरोना को थामने में कामयाब रहा, तो इसका श्रेय सीधे उसके द्वारा बरती गई कड़ाई को जाता है। वुहान में इतनी कड़ाई बरती गई कि लोग, मरीज और डॉक्टर भी बिलखते हुए देखे गए, लेकिन आज उसी वुहान में लोगों की तपस्या का फल है, वे खुले घूम रहे हैं, वहां कहीं लॉकडाउन की जरूरत नहीं रही। संभव है, यह सवाल आने वाली पीढ़ियां पूछेंगी कि भारत में क्या लॉकडाउन को जनता कर्पुय बताकर उदारता बरती गई थी? आज यह उदारता अगर हमें लगभग 5,000 लोगों की मौत तक घसीट लाई है, तो यह कितने काम की है, इसे एक बार ईमानदारी से परख लेने में कोई हर्ज नहीं है। बार-बार सरकार अपील कर रही है। रेलवे ने फिर अपील की है कि बहुत जरूरी होने पर ही लोग यात्रा करें, क्या लोग मान लेंगे? तमाम भीड़ वाली जगहों पर पूरी कड़ाई की जरूरत बढ़ गई है। जहां संक्रमण को रोकने के लिए प्रशासन को सख्त रवैया अपनाना चाहिए, वहीं उसे जरूरतमंद लोगों के प्रति पूरी ममता भी बरतनी चाहिए। भूखे और भयभीत लोगों की भगदड़ से देश को बचाना प्रशासन का काम है। योजनाओं, पैकेज, अनाज और पैसे की कोई कमी नहीं, लेकिन उसे निचले स्तर पर लोगों तक पहुंचाकर ही हम समाज में सुरक्षा और स्थिरता बहाल कर पाएंगे।

मजदूर 'भैया' से विहीन होते महानगर

आज मुंबई समेत देश के अनेक महानगर मेहनतकश, गरीब और गांव छोड़कर शहर आए हुए लोगों को हिकारत और उपेक्षा भरी दृष्टि से देख रहे हैं। दरअसल यह उस आचरण का नाम है जो मजदूरों के प्रति अपने दायित्व की अनदेखी कर यूज एंड थ्रो की नीति अपना रहे हैं। यदि हम खास तौर पर मुंबई की बात करें तो यूपी-बिहार से आए हुए मजदूरों को भैया कहकर संबोधित किया जाता है। ठसक, अकड़ और नकचड़ी मुंबई और मुंबई के लोग, यूपी-बिहार से आए हुए इन बेहद श्रमशील लोगों को भैया कहकर पुकारते हैं। किंतु एक बात और ध्यान रखिए, भैया शब्द को ये लोग आदरसूचक नहीं, व्यंग्यात्मक लहजे में उपयोग करते हैं। मुंबई जैसे समस्त बड़े नगर और औद्योगिक क्षेत्रों व राज्यों में यूपी, एमपी, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों से गए श्रमिकों के बल पर ही सारी व्यवस्थाएं चलती हैं। बड़े-बड़े नगर, महानगर इन प्रवासी श्रमिकों के पसीने की सिंचाई से हरे-भरे रहते हैं। किंतु यह भी सच है कि ये नगर इन मजदूरों को भले भैया जैसे अच्छे शब्द से पुकारें, किंतु पुकारेंगे उपेक्षा, उपहास और उलाहना देकर ही और देखेंगे तो बुजुआ दृष्टि से ही।

हाल के दिनों में जब मुंबई जैसे



बड़े नगरों में गए इन प्रवासी मजदूरों के घर लौटने का अनवरत किस्सा प्रारंभ हुआ तो खयाल आया कि ये लोग किस प्रकार बड़े नगरों की अर्थ व सामाजिक व्यवस्था का आधारस्तंभ बने हुए थे। जिन कांधों पर चढ़कर मुंबई और उसके व्यापारी, उद्योगपति चढ़कर इठलाते थे, उन कांधों को इस आद्वैतक राजधानी ने तनिक सी कठिनाई आने पर दूध में से मक्खी की तरह निकाल दिया। इन्हें न तो वेतन दिया और न ही भोजन। पूरा जीवन इन मजदूरों के पसीने का क्रीम-पाउडर बनाकर अपना चेहरा चमकाने वाली मुंबई इतनी निष्ठुर, पथरदिल और सौतेली निकली कि रिश्तों-नातों से विश्वास ही उठा गई। और यह

कहानी केवल मुंबई की ही नहीं, देश के अन्य महानगरों में भी मजदूरों के साथ कमोबेश यही बर्ताव हुआ है। कोरोना कालखंड की गाथाएं जब भी लिखी जाएंगी तो प्रवासी मजदूरों की कथा उन राज्यों के शून्य दायित्व बोध के साथ लिखी जाएगी जिन्होंने अपने यहां निवास कर रहे इन बाहरी मजदूरों की तनिक सी भी चिंता-फिक्र नहीं की। मुंबई से सैकड़ों-हजारों किमी की अपनी गांव यात्र के दौरान इन मजदूरों के दिल में जो विचार आ रहे होंगे, वे सारे यदि लिख लिए जाएं तो विधाता के आंचल की सारी ममता समाप्त हो जाएगी। वह तो अच्छा है कि ये मजदूर केवल सोचना जानते हैं, लिखना नहीं जानते। अरी निष्ठुर मुंबई, कम से कम

तू इतना तो याद रखती कि तेरे हर प्रसव की पीड़ा को इन यूपी-बिहार के भैया लोगों ने ही डोला है। तेरे नौनहालों पर अपनी जान न्योछवर करने वाले ये भैया लोग जब अपने घरों की हजार किमी की यात्र पर चलने लगे तो तू इनके बच्चों के पांव में एक-एक जोड़ी चपल भी न दे पाई! तेरे गलियारों में एक शब्द बड़ा गुंजाती है, जिसे चमक-दमक वाले लोग सीएसआर कहते हैं-कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉसिबिलिटी। दुखद विषय है कि इस सीएसआर ने भी इन मजदूरों को अनसोशल ही समझा और इनकी सोशल जवाबदारी नहीं ली। कुछ गीत और गाए जाते हैं मुंबई के मंचों पर जिसमें मानवाधिकार, सामाजिक सुरक्षा, श्रम कानून जैसे शब्द बड़े-बड़े नाटकीय और ईश्वरीय अंदाज में बोले जाते हैं। मुंबई इन बड़े-बड़े शब्दों को बोलते समय अपना मुंह इतना ममतामयी बनाती थी कि पूरे देश को उसकी दयालुता पर सहज ही विश्वास हो जाता था। आज पता चला कि ये सब तो छल के अलावा और कुछ नहीं था। मुंबई, तू बस झूमा करती है और फिल्में बहुत बनाती है। तू फिर फिल्में बनाएगी, उन्हीं मजदूरों की त्रासदी पर, और वे लोग उसे देखकर ताली बजाएंगी, यह तुझे मालूम है। लेकिन यह कटु सत्य है कि फिलहाल तुमने उन्हें बेबस हाल में छोड़ दिया है।

कामगारों की घर वापसी से गांवों में बेचैनी

पुणे में भूखों मरने की नौबत से घबराकर रामकिशन अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ किसी तरह महासमुंद जिला स्थित अपने गांव लौट आया है। पुणे में सप्ताह भर की भाग-दौड़ और अफसरों के हाथ-पैर जोड़ने के बाद आखिरकार उसे किसी तरह श्रमिक स्पेशल ट्रेन में जगह मिल पाई थी। ट्रेन में भूख और प्यास से व्याकुल बच्चों को किसी तरह संभालते हुए पत्नी के साथ जब वह रायपुर रेलवे स्टेशन उतरा तो उसकी आंखें डबडबा रही थीं।

बहुत देर तक वह संज्ञाशून्य स्थिति में स्टेशन परिसर में ही बैठा रहा। सजल पलकों से कभी प्लेटफॉर्म पर सरक रही ट्रेन तो कभी स्टेशन के बाहर के आसमान को निहार रहा था। आखिर अपनी माटी, अपना देस आंखों में डूबकर ही तो दिल तक उतरता है। परदेस में टूटी उम्मीदों को यही माटी, यही देस आगे बढ़कर सहारा भी देता है। बहरहाल वह स्टेशन से सीधे गांव के बाहर स्थित क्वार्टरहाउस सेंटर पहुंचता है। फिर वहां से चौदह दिन बाद घर की दहलीज पर कदम रखता है। पुणे में स्टोर कीपर की नौकरी करने वाला रामकिशन ढाई साल बाद गांव लौटा है। शुरू के दो-चार दिन का समय तो भाई-भतीजे, भाभियां, चाची-ताई और बचपन के दोस्तों से मिलने-जुलने में कट गए। कइयों ने देश-दुनिया में फैल रहे कोरोना का हालचाल पूछा। पूछने वाले को यह पता ही कहाँ था कि लॉकडाउन के दौरान पुणे में डोली दुश्वारियों के अलावा उसे कुछ पता नहीं। कोरोना के बारे में तो



उसे शायद ग्रामीणों से भी कम जानकारीयां हैं। पिछले दो महीनों से तो वह बस इसी मशक्कत में लगा था कि मकान का किराया कैसे देना है, राशन-पानी कैसे जुटाना है, बिना तनखाहा मिले पूरे परिवार की गाड़ी को कैसे चलाना है। सेट से पैसे मांगे तो उसने कारोबार ठप होने की बात कहकर टरका दिया। महीना शुरू होते ही मकान मालिक अल्टीमेटम देने लगा। आखिर के पंद्रह-बीस दिन तो बेहद तंगहाली में गुजरे। पत्नी ने घर लौट जाने की सलाह दी तो ट्रेन पकड़कर किसी तरह परिवार समेत गांव तो पहुंचा, लेकिन जेब खाली है। तेरह हजार की नौकरी में जो कुछ भी बचता था, लॉकडाउन उसे पुणे में ही लील चुका है। उधर छोटे भाई बालकिशन को अपेक्षाएं कुछ ज्यादा हैं। उसे लगता है कि पुणे से माल काटकर आया है। बालकिशन को नहीं पता कि भाई की जेब जर्जर है और पुणे में कोई ऐश-मौज की जिंदगी नहीं, बल्कि किसी तरह परिवार का पालन-पोषण कर रहा था। उल्टे अंदर ही अंदर इस बात से कुपित है कि घर में रखे अनाज को खाने वाले अब चार और लोग आ गए हैं। रामकिशन की दिक्कत यह है कि उसके पास गांव में कोई काम नहीं है। स्टोर

कीपर की नौकरी ने मनरेगा के लायक छोड़ा नहीं है। फिर कुछ लाज-शर्म भी है। भाई बालकिशन की तरह कई गांव वाले भी यही मान रहे हैं कि शहर में जाकर साफ-सुथरा और चिकना दिखने वाले रामकिशन के पास जमा-पूंजी तो है ही। मतलब कि उसकी दिक्कत से फिलहाल सभी अनजान हैं। फिर एक रामकिशन ही क्यों, इन दिनों दूसरे राज्यों से लौटे तमाम प्रवासी कामगारों के समक्ष यह बहुत बड़ी समस्या है। शहरों में दैनिक श्रम करने वालों के लिए तो मनरेगा फिर भी एक विकल्प है, लेकिन ये स्टोरकीपर, कंप्यूटर ऑपरेटर, सिव्क्योरिटी इंचार्ज, प्लंबर, इलेक्ट्रीशियन जैसे अनगिनत कामगारों के लिए गांव लौटना बड़ी मुसीबत बन गई है। गांवों में उनके पास फिलहाल कोई काम नहीं है और वे फाकाकशी के दौर काट रहे हैं। अपवाद को छोड़ दें तो इन प्रवासियों के भाई-भतीजे भी अंदर से बहुत खुश नहीं हैं। गांव की संपत्ति पर अचानक से पैदा हुई इस दावेदारी ने उन्हें व्याकुल कर दिया है। दबी जुबान से वे लॉकडाउन खत्म होने और इनके दोबारा शहर लौटने की बात जोह रहे हैं। कह सकते हैं कि कोरोना के चलते इन दिनों गांवों में एक अलग किस्म की बेचैनी भी पनप रही है। छत्तीसगढ़ के ऐसे प्रवासियों के लिए यहां के उद्यमियों की ताजा पहल उम्मीद की किरण लेकर आई है। उद्यमियों ने कई गांवों के सरपंचों, पंचायत प्रतिनिधियों और यहां तक कि सरकारी विभागों से यह कहा है कि उन्हें कुशल यानी प्रशिक्षित श्रमिकों की जरूरत है।

यस बैंक घोटाला: मनी लॉन्ड्रिंग के लिए बनाई थी 100 से अधिक कंपनियां, पत्नी को 87 करोड़ का 'गिफ्ट'

मुंबई। यस बैंक घोटाले की जांच में लगे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बताया है कि बैंक के संस्थापक राणा कपूर और उनके परिवार के सदस्यों ने 100 से अधिक छोटी-छोटी कंपनियां बनाकर रकम को ट्रांसफर किया। इसके साथ ही राणा ने अपनी पत्नी के मालिकाने हक वाली कंपनी को 87 करोड़

रुपये बतौर गिफ्ट दे दिए। ईडी इन सभी कंपनियों का कच्चा-चिट्टा खंगाल रही है। प्रवर्तन निदेशालय अब दिवालिया हो चुकी डीएचएफएल और यस बैंक के बीच 2018 में हुए लेन-देन के मनी लॉन्ड्रिंग के केस में जांच कर रही है। जांच में 5050 करोड़ रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग की बात निकलकर



सामने आई। यह बात भी सामने आई कि कैसे और फंड को डायवर्ट करने के लिए कपूर फैमिली से जुड़ी कई कंपनियों का इस्तेमाल किया गया। यस बैंक केस की सुनवाई कर रही स्पेशल पीएमएलए कोर्ट में प्रवर्तन निदेशालय ने बताया, अभी तक हुई जांच में 100 से भी अधिक कंपनियों

का खुलासा हुआ, जिसका मालिकाना हक कपूर की फैमिली के पास था। इन सभी फर्म को राणा कपूर ही मैनेज कर रहा था। इन सभी कंपनियों का इस्तेमाल फंड को ट्रांसफर करने और मनी लॉन्ड्रिंग के लिए किया जाता था। ये सभी फर्म्स रियल एस्टेट, फैशन, ईको टूरिज्म से जुड़े हुए हैं।

पत्नी की कंपनी में 87 करोड़ रुपये बतौर गिफ्ट: इन कंपनियों में मुख्य तौर पर आरएबी इंटरप्राइजेज, मॉर्गन क्रेडिट्स प्राइवेट लिमिटेड, DOIT अर्बन वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड शामिल हैं, जिन्हें ईडी की चार्जशीट में शामिल किया गया है। ईडी के अनुसार आरएबी इंटरप्राइजेज राणा कपूर की पत्नी विंदु के मालिकाने हक में है। उनके पास आय का खुद कोई जरिया नहीं है लेकिन राणा ने 87 करोड़ रुपये उनके नाम पर रजिस्टर्ड कंपनी में ट्रांसफर किया था। ईडी के अनुसार राणा ने गिफ्ट के तौर पर अपनी पत्नी को यह रकम ट्रांसफर किया। मार्च में आरबीआई ने यस बैंक के अकाउंट्स से 50 हजार रुपये निकासी की सीमा तय की थी। इसके 3 दिन बाद 8 मार्च को ईडी ने बैंक के संस्थापक राणा कपूर को गिरफ्तार कर लिया था। निकासी की लिमिट हालांकि 10 दिनों बाद ही हटा ली गई थी। ईडी की जांच में यह भी सामने आया कि डीएचएफएल से 12 हजार करोड़ रुपये बेईमानी से निकाले गए।

महाराष्ट्र में विधानसभा का मानसून सत्र छोटा करने पर विचार



मुंबई। कोविड-19 से सबसे अधिक प्रभावित महाराष्ट्र कम अवधि के लिए ही सही लेकिन राज्य विधानसभा का मानसून सत्र आयोजित करने पर विचार कर रहा है। सूत्रों ने शुक्रवार को बताया कि पहले विधानसभा की बैठक करने और फिर उसके बाद 78 सदस्यीय परिषद की बैठक आयोजित करने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि विधानसभा में 288 सदस्य हैं इसलिए सत्र विधानसभा इमारत में निर्धारित 'निचले सदन' की बजाय सेंट्रल हॉल में भी आयोजित किया जा सकता है ताकि विधायकों के बीच उचित सामाजिक दूरी सुनिश्चित की जा सके। सेंट्रल हॉल काफी बड़ा है और सामान्य परिस्थितियों में दोनों सदनों के सदस्यों की संयुक्त बैठकें वहां होती हैं। सूत्र ने बताया कि सत्र की अवधि, तारीख आदि का निर्णय व्यवसाय सलाहकार समिति (बीएसी) नौ जून को होने वाली बैठक में लेगी। बीएसी में सरकार और विपक्ष दोनों के सदस्य शामिल हैं। इससे पहले मानसून सत्र 22 जून को शुरू होने वाला था।

'हर जिले में कोविड-19 जांच लैब स्थापित करना संभव नहीं'

संवाददाता
मुंबई। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को बंबई उच्च न्यायालय से कहा कि राज्य के हर जिले में कोविड-19 जांच प्रयोगशाला (लैब) स्थापित करना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। मुख्य न्यायाधीश दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति के. के. ताटेड के समक्ष पेश किये गये एक 'नोट' में सरकार ने कहा कि अभी राज्य में 72 जांच केंद्र हैं। शुरूआत में जब महामारी शुरू हुई थी, तब सिर्फ तीन जांच केंद्र-नागपुर, मुंबई और पुणे में एक-एक थे। अतिरिक्त सरकारी वकील मनीष पाबले ने अदालत से कहा, जांच प्रयोगशाला की संख्या अब बढ़ कर 72 हो गई है, जिनमें 42 प्रयोगशाला सरकारी अस्पतालों में हैं, जबकि



शेष 33 निजी प्रयोगशाला हैं। पीठ खलील वास्ता नाम के एक मछुआरे की याचिका पर सुनवाई कर रही है, जिन्होंने गैर-रेड जोन जिलों में कोविड-19 संक्रमण की जांच के लिये विशेष प्रयोगशालाएं स्थापित करने को लेकर सरकार को निर्देश देने की मांग की थी। पीठ को शुक्रवार को पाबले ने बताया कि रत्नागिरि सदर अस्पताल में कोविड-19 संक्रमण की जांच के लिये एक प्रयोगशाला स्थापित की गई है। हालांकि सरकार ने अदालत से कहा कि संसाधनों एवं तकनीकी बुनियादी ढांचा के अभाव के चलते राज्य के हर जिले में प्रयोगशाला स्थापित करना संभव नहीं है। अदालत ने याचिका पर अगली सुनवाई के लिये दो जून की तारीख निर्धारित की है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

देश में 4975 मौतें

राजस्थान, पंजाब और ओडिशा में 2-2 लोगों की मौत हुई। आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, केरल और छत्तीसगढ़ में 1-1 संक्रमित ने दम तोड़ा। महाराष्ट्र में अब तक कोरोना से 2098 और गुजरात में 980 संक्रमित जान गंवा चुके हैं। इससे पहले, बुधवार को एक दिन में सबसे ज्यादा 187 मरीजों ने दम तोड़ा था। महाराष्ट्र में कोरोना का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। यहां हर 14 मिनट में 1 मौत हो रही है, जबकि हर घंटे 91 मामले सामने आ रहे हैं।

अब 11 अंको का होगा आपका मोबाइल नंबर

ट्राई में अपने प्रस्ताव में कहा कि मोबाइल नंबर के पहला अंक अगर 9 रखा जाए तो 10 से 11 अंको के मोबाइल नंबर पर स्विच होने से देश में कुल 10 बिलियन (1000 करोड़) नंबरों की क्षमता हो जाएगी। ट्राई ने आगे कहा कि 70 प्रतिशत यूटिलाइजेशन और मौजूदा पॉलिसी के साथ 700 करोड़ कनेक्शन होने तक के लिए काफी है। इसके अलावा ट्राई ने फिक्सड लाइन से कॉल करते वक्त मोबाइल नंबर के आगे '0' लगाने का भी सुझाव पेश किया है। अभी की बात करें

तो फिक्सड लाइन कनेक्शन से इंटर-सर्विस एरिया मोबाइल कॉल के लिए नंबर की शुरूआत में '0' लगाने की जरूरत पड़ती है। हालांकि, मोबाइल नंबरों को लैंडलाइन से बिना शुरूआत में जीरो लगाए भी ऐक्सेस किया जा सकता है। ट्राई ने कहा कि फिक्सड नेटवर्क से मोबाइल पर कॉल करने के लिए जीरो लगाना अनिवार्य होने पर लेवल 2, 3, 4 और 6 में सभी फ्री सब-लेवल्स को मोबाइल नंबर के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसके अलावा ने एक नया नेशनल नंबरिंग प्लान को सुझाव भी दिया है, जिसे जल्द से जल्द से उपलब्ध कराना है। साथ ही ट्राई ने डॉनल्स के लिए इस्तेमाल होने वाले मोबाइल नंबर को 10 अंको से बढ़ाकर 13 अंक करने की भी बात कही है।

11 साल के निचले स्तर पर देश की...

दरअसल, साल 2008 में दुनियाभर में मंदी छाई हुई थी। इस मंदी ने भारतीय इकोनॉमी को भी प्रभावित किया। इसका असर जीडीपी आंकड़ों पर देखने को मिला। आज करीब 11 साल बाद देश की जीडीपी एक बार फिर उसी स्तर के करीब जा पहुंची है। दरअसल, वित्त वर्ष 2019-20 में जीडीपी की ग्रोथ 4.2 फीसदी

पर रही। यह करीब 11 साल का निचला स्तर है। इससे पहले 2008-09 में जीडीपी ग्रोथ इस स्तर तक पहुंची थी। इन 11 साल में जीडीपी के चाल की बात करें तो ग्रोथ का सबसे उच्चतम स्तर वित्त वर्ष 2016-17 में रहा। इस वित्त वर्ष में देश की जीडीपी ग्रोथ रेट 8.25 फीसदी पर रही। हालांकि, इसके बाद के 3 वित्त वर्ष में लगातार गिरावट का दौर देखने को मिल रहा है। वित्त वर्ष 2019-20 की चौथी तिमाही यानी जनवरी से मार्च के बीच जीडीपी ग्रोथ रेट 3.1 फीसदी पर रही। इसी तरह, दिसंबर तिमाही में देश की जीडीपी ग्रोथ रेट 4.7 फीसदी पर आ गई थी। इसके अलावा 2019-20 की पहली तिमाही के लिए जीडीपी ग्रोथ रेट को संशोधित कर 5.6 फीसदी और दूसरी तिमाही के लिए 5.1 फीसदी कर दिया गया था। कोरोना वायरस के प्रकोप को देखते हुए वित्त वर्ष 2020-21 का साल और बुरा होने की आशंका है। बीते दिनों भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने तो यहां तक कह दिया कि वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान देश के जीडीपी में ग्रोथ निगेटिव रहेगी यानी इसमें गिरावट आएगी।



ममता बनर्जी का ऐलान बंगाल में 1 जून से धार्मिक स्थान खुलेंगे

सरकारी और प्राइवेट ऑफिस में 100 फीसदी स्टाफ आएगा

संवाददाता

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्य में 1 जून से पाबंदियों में ढील का ऐलान किया। ममता के मुताबिक, राज्य में सभी धार्मिक स्थल 1 जून से खुल जाएंगे। उन्होंने कहा कि 1 जून से ही सभी सरकारी और प्राइवेट ऑफिसों में सभी कर्मचारी आएंगे। दूसरी तरफ, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बातचीत के बाद कहा कि देश में लॉकडाउन 15 दिन बढ़ सकता है। शाह ने प्रधानमंत्री मोदी को मुख्यमंत्रियों से हुई बातचीत का ब्योरा भी दिया। ममता ने शुक्रवार को दो बड़े ऐलान किए। पहला- सभी धार्मिक स्थल एक जून से खुल सकेगें। दूसरा- सरकारी और प्राइवेट में अब सभी कर्मचारी आएंगे। यानी 100 फीसदी अटेंडेंस होगी। बनर्जी कुछ दिनों से प्रवासी मजदूरों को राज्य सरकार भेजने के लिए रेलवे पर सवाल उठाती रही हैं। उनका तर्क है कि केंद्र सरकार ने इस मामले पर राज्य सरकार से विचार विमर्श नहीं किया। ममता ने कहा- सभी धार्मिक स्थल जैसे मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा 1 जून से खुल जाएंगे। एक बार में 10 लोगों से ज्यादा के जाने की इजाजत नहीं होगी।



मोदी और शाह की बातचीत

गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री मोदी के साथ लॉकडाउन पर चर्चा की। शाह ने इससे पहले सभी मुख्यमंत्रियों से लॉकडाउन बढ़ाने पर चर्चा की थी। शाह ने मुख्यमंत्रियों की राय प्रधानमंत्री के साथ साझा की। माना जा रहा है कि सरकार 31 मई को खत्म हो रहे लॉकडाउन को मौजूदा शर्तों के साथ ही 15 दिन और बढ़ा सकती है।

सावंत ने क्या कहा ?

गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने आज ही कहा है कि देश में कोरोना के मामले बढ़ रहे हैं, इन्हें रोकने के लिए लॉकडाउन बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम गोवा में रेस्टोरेंट, होटल, मॉल और जिम को सोशल डिस्टेंसिंग के साथ खोलने की छूट मांगेंगे। उन्होंने कहा कि देश में लॉकडाउन 31 मई के बाद 15 दिन और बढ़ सकता है।

लगातार बढ़ता जा रहा है कोरोना का मामला

संवाददाता

टाण्डा (रामपुर)। कोरोना वायरस से सम्बंधित मरीजों की संख्या नगर के अंदर लगातार बढ़ती चली जा रही है मरीजों की संख्या को देखते हुए शासन एवं प्रशासन में हड़कंप मच गया नगरीय युवक मो० बरगद व आजाद नगर को कोरोना वायरस के संदेह होने पर उसके



परिवार वालों को जांच के लिए प्रयोग शाला भेजा गया है इसी के मद्देनजर पुलिस की कड़ी पहरे दारी के साथ साथ मोहल्ले को सीलकर दिया गया है मुख्य मार्ग से नगर के अंदर जाने वाले रास्तों पर बैरिकेडिंग कर दी गई है नगर पालिका परिषद द्वारा सेनेटाइज व फागिंग का कार्य भी कराया जा रहा है एस.डी.एम गौरव कुमार कोतवाल माधो सिंह बिष्ट अधिशासी राजेश सिंह राणा, पालिकाध्यक्ष मेहनानज

जहाँ पति मकसूद लाला सहित सम्पूर्ण नगर का भ्रमण कर लोगों से कोरोना बचाव की जानकारी व मास्क का प्रयोग किया जाना अनिवार्य बताया गया निर्देशों का पालन न किये जाने पर उल्लंघन करने वाले के साथ कड़ी कार्यवाही कर जुर्माना भी वसूला जायेगा।

मौसम ने बदला मिजाज



संवाददाता

टाण्डा (रामपुर)। तेज एवं भीषण गर्मी के चलते मौसम ने अपना मिजाज बदल दिया है तापमान में भी गिरावट आई है लोगों में मौसम के प्रति हल्की वृद्धा बांदी के साथ राहत की सांस ली है क्षेत्र में मानसून अबकी बार जबरदस्त सक्रिय होने की आशाए व्यक्त की जा रही है। मौसम के प्रति क्षेत्र में खुशहाली का माहौल बना हुआ है धान की फसल अधिक पैदावार होने की भी उम्मीदें जताई जा रही है ऋषकों में भी खुशहाली छाई हुई है।

छत्तीसगढ़ के पहले मुख्यमंत्री रहे अजीत जोगी का 74 साल की उम्र में निधन उन्हें 20 दिन में तीसरी बार दिल का दौरा पड़ा था

संवाददाता

रायपुर। छत्तीसगढ़ के पहले मुख्यमंत्री रहे अजीत जोगी का शुक्रवार को निधन हो गया। वे 74 साल के थे। 20 दिन में तीसरी बार दिल का दौरा पड़ने के बाद उनकी हालत गंभीर हो गई थी। डॉक्टरों ने 45 मिनट तक कोशिशें कीं, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। जोगी ने दोपहर 3 बजकर 30 मिनट पर आखिरी सांस ली। वे 2000 से 2003 के बीच छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रहे। बेटे अभित जोगी ने ट्वीट कर पिता अजीत के निधन की जानकारी दी। जोगी 9 मई से कोमा में थे। इमली का बीज गले में अटकने की वजह से उन्हें पहली बार दिल का दौरा पड़ा था। इसके बाद 27 की मई की रात भी



उन्हें दिल का दौरा पड़ा। हालांकि, अगले ही दिन उनकी सेहत में थोड़ा सुधार देखा गया। जब शुक्रवार को उन्हें दोबारा दिल का दौरा पड़ा तो रायपुर के श्रीनारायणा अस्पताल की ओर से एक मेडिकल बुलेटिन जारी किया गया। इसमें बताया गया कि जोगी परिवार की सहमति लेकर डॉक्टरों ने उन्हें एक विशेष इंजेक्शन लगाया है। यह बहुत ही रेयर किस्म का इंजेक्शन है। इसका इस्तेमाल छत्तीसगढ़ में बहुत कम हुआ है। जोगी के ब्रेन में कोई हलचल नहीं हो रही थी। शुक्रवार को तीसरी बार हार्ट अटैक आने के बाद डॉक्टरों ने उन्हें सीपीआर यानी कार्डियो पल्सनरी रेस्पुसाइटेशन भी दिया। यह घड़कन रुक जाने की स्थिति में दिया जाता है।

इंजीनियरिंग में गोल्ड मेडलिस्ट रहे, आईएएस बने: अजीत जोगी का पूरा नाम अजीत प्रमोद कुमार जोगी था। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के पैड़ा में 29 अप्रैल 1946 को उनका जन्म हुआ। वे बीई मैकेनिकल में गोल्ड मेडलिस्ट रहे। फिर रायपुर के इंजीनियरिंग कॉलेज में वे 1967-68 में लेक्चरर रहे। बाद में वे आईएएस बने। 1974 से 1986 तकरीबन 12 साल तक सीधी, शहडोल, रायपुर और इंदौर में कलेक्टर रहे।

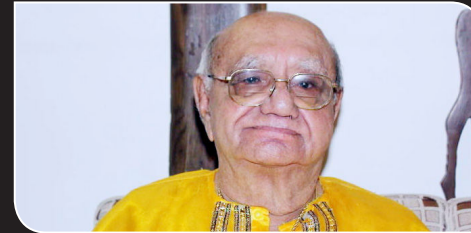
राजीव गांधी के कहने पर राजनीति में आए: 1986 में राजीव गांधी के कहने पर अजीत जोगी ने कलेक्टर की नौकरी छोड़ी और कांग्रेस से राजनीतिक सफर की शुरुआत की। अजीत जोगी 1986 से 1998 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। इस दौरान कांग्रेस में वे अलग-अलग पदों पर काम करते रहे। 1998 में रायगढ़ से लोकसभा सांसद चुने गए।

2016 में उन्होंने नई पार्टी बनाई: 2000 में जब छत्तीसगढ़ राज्य बना, तो अजीत जोगी पहले मुख्यमंत्री बने। वे 2003 तक सीएम रहे। 2016 में कांग्रेस से बगावत कर उन्होंने अपनी अलग पार्टी जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ बना ली।

मशहूर ज्योतिषाचार्य बेजान दारुवाला का निधन कोरोना के लक्षण के बाद चल रहा था इलाज

संवाददाता

अहमदाबाद। मशहूर एस्ट्रोलॉजर बेजान दारुवाला का 89 वर्ष की आयु में अपोलो अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया। कोरोनावायरस संक्रमण के चलते उनकी मौत हुई है। हालांकि, उनके बेटे ने इस बात से इनकार किया है। बेजान दारुवाला के बेटे नास्तुर दारुवाला ने बातचीत में कहा कि निमोनिया और ऑक्सीजन की कमी के कारण



उनकी मृत्यु हुई। गुजरात के सीएम विजय रूपानी ने बेजान दारुवाला के निधन पर दुख जताया है। बेजान दारुवाला पूरी दुनिया में अपनी भविष्यवाणियों के लिए मशहूर थे। जब भारत समेत पूरी दुनिया में कोरोनासंक्रमण फैल रहा था, तब उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि कोरोना के लिए अब एक कठिन समय होगा। दारुवाला भगवान गणेश के भक्त थे। उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

संजय गांधी की मौत के बारे में भी भविष्यवाणी की थी: उन्होंने 2014 और 2019 में मोदी की जीत की भविष्यवाणी की थी। दोनों ही लोकसभा चुनाव में भाजपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई थी। बेजान दारुवाला ने ही यह भविष्यवाणी की थी कि संजय गांधी की दुर्घटना में मौत होगी। 23 जून 1980 को संजय गांधी की सफरदरज हवाई अड्डे के पास एक विमान दुर्घटना में मौत हो गई थी।

सराहनीय कार्य को देखते हुए सर्टिफिकेट देकर किया गया सम्मानित



मुंबई। पूरे देश में कोरोना जैसे महामारी बीमारी फैल जाने से लॉकडाउन के चलते सैकड़ों गरीब परिवार अस्त व्यस्त हो गया है, जिसको देखते हुए आपकी आवाज फाउंडेशन की तरफ से मालवानी के गेट नं. 7 अजमी नगर में और गेट नं. 8 अमृजवाणी में कुल मिलाकर 5000 हजार जरूरतमंद गरीब परिवार को राशन दिया गया है, इस सराहनीय कार्य को देखते हुए मुंबई दार्शनिक न्यूज पेपर के संपादक कल्याण जाना और सिविलियन व होमगार्ड के नेशनल प्रेसिडेंट परवेज आर. शेख के कमलों हाथों द्वारा आपकी आवाज फाउंडेशन ऑल इंडिया प्रेसिडेंट व आपकी आवाज न्यूज पेपर के संपादक अंजन गोस्वामी और ऑल इंडिया वाइस प्रेसिडेंट पुष्पा गोस्वामी तथा ऑल इंडिया वाइस प्रेसिडेंट विजयाश्री को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया है, उसी के साथ कई पदाधिकारी को भी सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

रेलवे की बेदर्द अपील श्रमिक ट्रेनों में गर्भवती महिलाएं, बच्चे सफर न करें



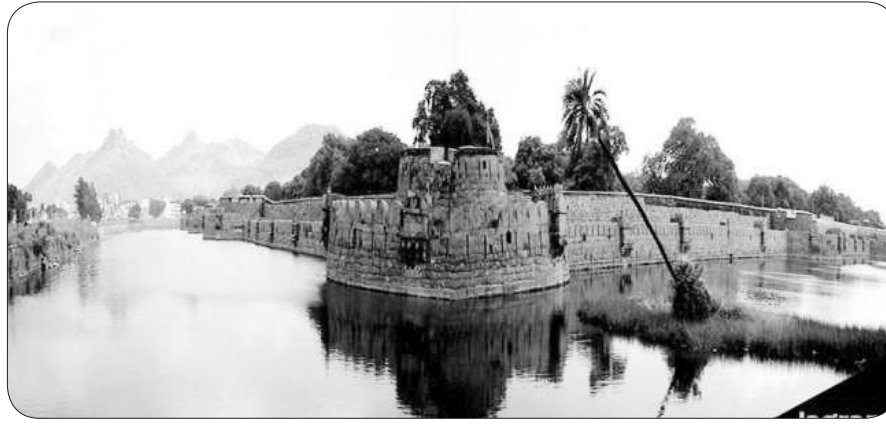
नई दिल्ली। रेलवे ने शुक्रवार को एक अजीब अपील की। कहा- पहले से बीमार लोग, गर्भवती महिलाएं, 10 साल से कम उम्र के बच्चे और बुजुर्ग श्रमिक ट्रेनों में यात्रा करने से बचें। थोड़ी देर बाद रेल मंत्री पीयूष गोयल भी सामने आए। रेल मंत्री ने भी ट्वीट करके यही बात दोहराई। वस अपने अफसरों की बातों को थोड़ा सुधार दिया। बोले- आवश्यक होने पर ही यात्रा करें। पर सबसे जरूरी बात ये है कि इन श्रमिक स्पेशल ट्रेनों में सफर कौन कर रहा है? सीधा-सा जवाब है- सबसे मजदूर लोग। तो क्या ये लोग परिवार को छोड़कर निकल पड़ें? रेलवे और मंत्रीजी की अपील तब सामने आई है, जब घर लौटते मजदूरों और उनके बच्चों की मौत का सिलसिला बदस्तूर जारी है। 48 घंटे में श्रमिक ट्रेनों में 9 लोगों की मौत हुई है। जो मजदूर लॉकडाउन की वजह से 2 महीनों से दूसरे राज्यों में फंसे हैं, वे अपने घर के बुजुर्गों, बच्चों और गर्भवती महिलाओं को पीछे अकेला छोड़कर सफर कैसे कर सकते हैं? इन लोगों के लिए श्रमिक ट्रेनों एक मई से शुरू हुई हैं। गुरुवार को प्रवासियों के मुद्दे पर जब सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई, तब सरकार ने दावा किया कि 27 दिन के अंदर हमने 91 लाख लोगों को घर पहुंचाया है। लेकिन मुंबई, दिल्ली के रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों से रोज सामने आ रही तस्वीरें बताती हैं कि अभी भी बड़ी तादाद में मजदूरों को घर वापसी का इंतजार है। रेलवे ने अपने बयान में कहा- यह देखने में आया है कि ट्रेनों में कुछ ऐसे लोग भी सफर कर रहे हैं, जो पहले से किसी न किसी वजह से बीमार हैं। इस वजह से उनके सामने कोरोना का खतरा ज्यादा है। पहले से बीमार हालत में सफर कर रहे लोगों की मौत होने के कुछ मामले देखे गए हैं।

भारत का ये शहर है मिनी इंग्लैंड, ट्रेकिंग और पैराग्लाइडिंग के लिए है मशहूर

भारत में ऐसी कई जगह हैं, जो घूमने-फिरने के मामले में विदेश की किसी जगह से कम नहीं हैं। आप यहां घूमकर विदेश जैसा अनुभव ले सकते हैं बल्कि भारत में ऐसी कई डेस्टिनेशन्स हैं, जिनकी तुलना विदेश से की जाती है। उन जगहों को मिनी स्विटजरलैंड, मिनी फ्रांस आदि जगहों से नवाजा जाता है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं, भारत की एक खास जगह वैल्लोर के बारे में। जिसकी सुंदरता की वजह से उसे 'मिनी इंग्लैंड' के नाम से जाना जाता है। आइए, जानते हैं वैल्लोर की खास बातें।

मिनी इंग्लैंड भारत में

वैल्लोर को दक्षिण भारत के प्राचीनतम शहरों में से एक माना जाता है। यह शहर वे ल्लोर किले के पास स्थित पलार नदी के किनारे बसा है। यह शहर चेन्नई और बैंगलोर तथा मंदिरों के शहर थिरुवनमलाई एवं तिरुपति के बीच स्थित है। तमिलनाडु के वैल्लोर जिले में 29 स्वोन्नयर किमी के क्षेत्र में फैला येलागिरि एक छोटा सा हिल स्टेशन है। बैंगलोर से 40 किमी दूर स्थित है औद्योगिक शहर होसूर। आजादी से पूर्व ब्रिटिया काल में होसूर को 'छोटा इंग्लैंड' कहा जाता था। सालभर सुहावना मौसम होने के कारण इसका वातावरण इंग्लैंड



से मिलता था। होसूर के दो प्रमुख पर्यटन स्थल हैं राजाजी स्माइक और प्रत्यानगिरि मंदिर।

है। यहां हरी-भरी पहाड़ियां आपका स्वागत करती हैं। यह एक विलक्षण पहाड़ी स्थल है और तमिलनाडु के पहाड़ी स्थलों में से सबसे प्राचीन एवं प्रदूषणरहित है। येलागिरि पहाड़ियों का इलाका पिछड़ा हुआ है, जिसमें कॉटेज एवं फार्म हॉउस जैसी दिखने योग्य कुछ गिनेचुने विकास ही हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद इसने अपने ऊपर ह्यदूरस्थल का ठप्पा लगा रखा है।

हरियाली के लिए मशहूर

पैराग्लाइडिंग प्वाइंट देशभर में मशहूर

यहां पर कई क्लब पैराग्लाइडिंग करवाते हैं। ये क्लब तीन प्वाइंट पर 450 मीटर, 560 मीटर और 600 मीटर की ऊंचाई पर पैराग्लाइडिंग करवाते हैं। येलागिरि को पैराग्लाइडिंग के लिए लोकप्रिय बनाने के लिए यहां इंटरनेशनल पैराग्लाइडिंग फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है।

मुंबई हलचल राशिफल

-आचार्य परमानंद शास्त्री

मेष: प्रेम-प्रसंग में तनाव रहेगा। चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। पुराना रोग उभर सकता है। जोखिम न लें।

वृष: जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। कानूनी अड़चन दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रसन्नता बनी रहेगी।

मिथुन: परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। पुराना रोग उभर सकता है। भूमि व भवन के कार्य बनेंगे।

कर्क: विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। तनाव रहेगा।

सिंह: शोक समाचार मिल सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। विवाद को बढ़ावा न दें। जोखिम न लें। धैर्य रखें।

कन्या: प्रयास सफल रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। प्रसन्नता रहेगी। भागदौड़ रहेगी।

तुला: शुभ समाचार प्राप्त होंगे। पुराने मित्र व संबंधी मिलेंगे। प्रसन्नता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। बैचैनी रहेगी।

वृश्चिक: रोजगार मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। संतान की चिंता रहेगी।

धनु: फालतू खर्च होगा। शारीरिक कष्ट संभव है। तनाव रहेगा। कार्य की गति धीमी रहेगी। जोखिम न उठाएं।

मकर: बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। मान-सम्मान मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। प्रसन्नता रहेगी।

कुंभ: नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। नेत्र पीड़ा संभव है। लाभ होगा।

मीन: धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। कानूनी बाधा दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। जोखिम न लें। धनार्जन होगा।

महाराष्ट्र के अंबाबाई मंदिर में अब दिखेंगी महिला पुजारी

दुनिया में कई घटनाएं ऐसी होती हैं, जो किसी जगह विशेष को लेकर लोगों की रुचि बढ़ाने का काम करती हैं। जैसे पद्मावत फिल्म के सुर्खियों में रहने के दौरान राजस्थान पर्यटन में जबर्दस्त इजाफा देखने को मिला था। राजस्थान में खासकर चित्तौड़गढ़ किले पर घूमने वाले पर्यटकों की संख्या में इजाफा देखने को मिला था।

इसी तरह महाराष्ट्र का कोल्हापुर भी इन दिनों सुर्खियों में है।

दरअसल यहां के अंबाबाई मंदिर में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है। कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर में पुजारियों की पेशेवर नियुक्ति को समाप्त कर दिया। यह मंदिर अंबाबाई के नाम से जाना जाता है। विधानसभा ने इस संबंध में एक कानून पारित किया है। इसके साथ ही मंदिर में महिलाओं की नियुक्ति में 50 फीसदी आरक्षण पर मुहर लगाई गई है। महाराष्ट्र सरकार एक कमिटी का गठन करने



जा रही है, जिसमें चेयरमैन के अलावा आठ सदस्य, एक डेप्युटी चेयरमैन और एक खजांची होंगे।

ये लोग मंदिर से जुड़े रोजमर्रा के मामलों को देखेंगे। इसके अलावा मंदिर में राज्य सरकार

पुजारी नियुक्त करेगी और उन्हें हर महीने तयशुदा वेतन मिलेगा। इस समिति को दान में मिली रकम को खर्च करने की छूट होगी।

वहीं दूसरी ओर इस फैसले से कई पुरुष पुजारी नाखुश भी दिख रहे हैं। इस फैसले की वजह से मंदिर में लोगों की संख्या में इजाफा देखने को मिला है। इसकी वजह इस अनोखे फैसले को बताया जा रहा है। इस फैसले को एक नई पहल माना जा रहा है।

दुनिया के किस कोने में कितने रहते हैं भारतीय!

कहते हैं कि विदेश भी अपना लगने लगता है जब वहां अपने देश के लोग शामिल हो। भारतीय जहां जाते हैं वहीं पर अपनी दुनिया बसा लेते हैं। फिर दुनिया के किसी भी कोने में चले जाओ आपको वहां पर इंडियन्स जरूर मिल जाएंगे। आजकल ज्यादातर युवाओं में भी विदेश में पढ़ने और वहीं पर रहने का क्रेज बढ़ता जा रहा है। हाल ही में एक रिपोर्ट के मुताबिक यह बात सामने आई है कि विदेश में रहने वाले प्रवासियों में सबसे ज्यादा संख्या भारतीयों की है। जो अपना देश छोड़ दुनिया के अगल-अलग कोनों में जा बसे हैं।

1. संयुक्त अरब अमीरात
संयुक्त अरब अमीरात एक मुस्लिम देश है लेकिन इसके खूबसूरत

शहर दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यहां 33.1 लाख के लगभग इंडियन्स रहते हैं।

2. सऊदी अरब

यहां पर भी बहुत से भारतीय बसे हुए हैं, सऊदी अरब में इनकी संख्या लगभग 22 लाख के करीब है।

3. अमेरिका

यू एस ए के बारे में बात की जाए तो शायद ही कोई होगा जो यहां जाना न चाहता हो। यहां भारतीयों की संख्या लगभग 22 लाख है।

4. ओमान

अच्छे काम-काज की तलाश में अपना घर छोड़ कर ओमान में जाकर रहने वाले भारतीयों का संख्या भी कुछ कम नहीं है। यहां पर 12 लाख के करीब भारतीय बसते हैं।

किराये पर कुत्ता लायें तनाव भगायें

जयपुर के श्वान व्यवहार विशेषज्ञ वीरेन शर्मा देश भर के मेट्रो शहरों में करीब 100 मैड (मैड अबाउट डॉग्स) केंद्र खोलने की योजना बना रहे हैं। यहां बेहतरीन नस्ल के कुत्तों के अलावा अन्य सुविधाएं भी मौजूद होंगी, जिनमें सैलून, स्पा, होटल, ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, मेडिकल सुविधाएं और व्यवहार सुधार इंस्टीट्यूट शामिल होंगे। शर्मा ने न्यूज एजेंसी प्रेट से बताया कि दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे शहरों में डॉग-डे-आउट की सुविधा भी मिलेगी। इनमें से कुछ सुविधाएं गुलाबी शहर जयपुर में पहले से ही मौजूद हैं। शर्मा ने बताया कि साल की दूसरी तिमाही में देश के बड़े मेट्रो शहरों में कुत्तों की रेंट फैसिलिटी शुरू करेंगे। यह कांसेप्ट पश्चिमी देशों में खूब प्रचलित है। लोग अपने काम का तनाव दूर करने के लिए किराए पर कुत्ते लेते हैं और उनके साथ समय बिताते हैं। इन दिनों बिजी लाइफ शेड्यूल में डॉग लवर्स खुद कुत्ता पाल कर उनकी देखभाल नहीं कर सकते हैं। ऐसे लोगों का स्वास्थ्य और जीवन पर असर पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित कुत्ते किराए पर मिलेंगे। शर्मा ने बताया कि यहां प्रशिक्षित कुत्ते किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। ये आउटलेट रिटेल चेन होंगे, एक ही छत के नीचे कुत्तों से संबंधित सभी चीजें मौजूद होंगी। यहां से आप कुत्ते खरीद-बेच सकेंगे। किराए पर ले सकेंगे। यहां उनकी देखभाल की सुविधा भी मौजूद होगी। शहर के बाहर जा रहे लोग अपने कुत्तों को यहां देखभाल के लिए छोड़ सकेंगे। शर्मा ने बताया कि जयपुर में अपनी तरह का पहला कैनाइन बिहेवियरल इंस्टीट्यूट अवटूर में खुलने जा रहा है। यह संस्थान विदेशों से आए एक्सपर्ट लोगों की देखरेख में तैयार किया जाएगा, जो कुत्तों को खास तौर पर प्रशिक्षित और केयर करेंगे।



किडनी को रखना है स्वस्थ तो करें इन जड़ी-बूटियों का सेवन

भागदौड़ भरी जिंदगी में गलत खान-पान के कारण किडनी से संबंधित समस्याएं बढ़ती जा रही है। किडनी शरीर का खास हिस्सा है जो शरीर से विषैले पदार्थ को बाहर निकालने में मदद करती है और शरीर को रोगों से बचाती है। इसलिए स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है। अगर आप चाहते हैं आपकी किडनी सही तरीके से काम करें तो दिन में अधिक से अधिक पानी पीएं और कुछ जड़ी बूटियों की भी मदद ले सकते हैं। इन जड़ी बूटियों से किडनी स्टोन, किडनी कैंसर और किडनी से संबंधित अन्य समस्याओं से बचा जा सकता है। आज हम आपको ऐसी जड़ी बूटियों को बारे में बताएंगे, जिसे इस्तेमाल करके आप अपनी किडनी को स्वस्थ रख सकते हैं।

1. अजमोद हर्ब

इसमें लूटेओलिन एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है जो शरीर से विषैले पदार्थ फ्री रेडिकल्स को बाहर निकाल कर किडनी को स्वस्थ रखने में मदद करता है। अजमोद में विटामिन ए और सी भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

2. धतूरे की जड़

किडनी को मजबूत करने में धतूरे की जड़ काफी मददगार है। यह रक्त शुद्धिकरण करने में भी मदद करती है। इसके सेवन से शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले एसिड और विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं। यह पिट्यूटरी ग्रंथि से प्रोटीन को बाहर निकाल कर हार्मोन में संतुलन बनाए रखता है।



3. अमरबेल हर्ब

अमरबेल पौधे के पीले फूल रक्त की शुद्धिकरण में मदद करते हैं। यह किडनी के अलावा लीवर को भी स्वस्थ रखता है।

4. करौंदा जड़ी बूटी

यह बहुत फायदे की जड़ी बूटी है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट किडनी से यूरिक एसिड को बाहर निकालने में मदद करता है। इसमें यूरिया निकालने की क्षमता होती है।

5. सिंहपर्णी की जड़

यह लीवर और किडनी से विषैले पदार्थों को बाहर निकाल कर उनकी कार्य करने की क्षमता को बढ़ाती है। यह भी रक्त शुद्धिकरण में मदद करता है।

6. मंजिष्ठा हर्ब

इसे आयुर्वेद में बहुत अच्छा माना गया है। यह किडनी के अलावा रक्त से भी विषैले पदार्थों को बाहर निकाल कर शुद्ध करता है।

7. गोल्डनरॉड (Goldenrod)

गोल्डनरॉड के सेवन से किडनी में मौजूद विषैले पदार्थ बाहर निकलते हैं और यह किडनी को मजबूत रखने में मदद करता है।

8. गुडूची (Guduchi)

किडनी को स्वस्थ रखने में यह बहुत कारगर उपाय है। गुडूची रक्त में होने वाले विषैले पदार्थों को बाहर निकालता है इसलिए इसका सेवन धूम्रपान और शराब पीने वाले लोगों के लिए काफी फायदेमंद होता है।

पार्लर से नहीं, घर पर इन 5 आसान स्टेप से करें बॉडी पॉलिशिंग



खुबसूरती के लिए लड़कियां कई ब्यूटी ट्रिटमेंट लेती हैं, जिसमें से एक है बॉडी पॉलिशिंग। बॉडी पॉलिशिंग आपके पूरे शरीर की खुबसूरती बढ़ाने का सबसे लाजवाब तरीका है। इससे बॉडी पर न सिर्फ ग्लो आता है बल्कि इससे पूरे शरीर की स्किन साफ और स्मूद भी हो जाती है। लड़कियां पार्लर में जाकर बॉडी पॉलिशिंग पर पैसे खर्चती हैं लेकिन आप घर पर भी आसान स्टेप से बॉडी पॉलिशिंग कर सकते हैं। इससे आपके पैसे भी बच जाएंगे और कोई नुकसान भी नहीं होगा।

क्या होती है बॉडी पॉलिशिंग बॉडी पॉलिशिंग एक ऐसा ट्रिटमेंट है, जिससे पूरे शरीर को एक्सफोलिएट और मॉइश्चराइज्ड किया जाता है। इससे जान गंवाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण बचपन से ही खान-पान की गलत आदत और कम शारीरिक मेहनत है। इसी कारण बच्चों में भी हार्ट के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ी है। अगर

आपको सन डैमेज और डिहाइड्रेट स्किन से राहत मिलती है। बच्चों इसके अलावा नियमित रूप से हर महीने से ही कुछ 1 बार बॉडी आदतें डाली जाएं, पॉलिशिंग तो उनमें दिल की बीमारियों करने से की आशंका कम होती है और डेड वो एक स्वस्थ और लंबा जीवन जी सकते हैं।

पढ़ाई के साथ खेल और एक्सरसाइज

आजकल माता-पिता बच्चों को हर समय पढ़ने की नसीहत देते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार पर देखें तो बच्चे एक दिन में 8-10 घंटे से ज्यादा पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। इसमें स्कूल में पढ़ाई का समय भी शामिल है। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों की फिजिकल फिटनेस भी जरूरी है। इसलिए बचपन से ही बच्चों को आउटडोर गैम्स के लिए प्रेरित करें और रोज कम से कम आधा घंटा एक्सरसाइज करवाएं। बच्चों को एक्सरसाइज करवाने के लिए आप भी एक्सरसाइज करें। इससे आप भी फिट रहेंगे। रोजाना आधा घंटा एक्सरसाइज करके आप दिल की बीमारियों की आशंका को 60 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं।

हेल्दी डाइट की आदत डालें

सेल्स निकल जाते हैं और शरीर में नए सेल्स बनते हैं। इसे कराने से शरीर में ऑक्सीजन स्पलाई भी अच्छी तरह होती है।

बॉडी पॉलिशिंग के लिए जरूर सामान स्क्रब

प्युमिस स्टोन

जैतून का तेल

इस तरह करें बॉडी पॉलिशिंग

स्टेप-1

बॉडी पॉलिशिंग करने के लिए सबसे पहले एक तौलिए को गर्म पानी में भिगोएं और इससे पूरे

दिल को

स्वस्थ रखने का सबसे आसान

तरीका है स्वस्थ और पौष्टिक आहार खाना। इसके लिए बच्चों को बचपन से ही कम शुगर और कम नमक खाने की आदत डालवाएं। इसके अलावा अनहेल्दी फैट युक्त आहार, हार्ड कैलोरी फास्ट फूड्स और जंक फूड्स बहुत कम खाने दें। किसी स्पेशल मौक पर कुछ फास्ट फूड्स खाए जा सकते हैं मगर उन्हें

शरीर को साफ करें। आप चाहें तो शरीर को साफ करने के लिए गुनगुने पानी से शॉवर भी ले सकती हैं।

स्टेप-2

शरीर को साफ करने के बाद जैतून के तेल को गुनगुना कर लें। इसके बाद इससे चेहरे और शरीर पर मसाज करके 5-10 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद शरीर को साफ कर लें।

स्टेप-3

तेल साफ करने के बाद पूरे शरीर पर स्क्रब लगाएं। इसके लिए आप घर में चीनी और शहद को मिलाकर भी स्क्रब बना सकती हैं। आप चाहें तो

कोलेस्ट्रॉल, अपनी स्किन टाइप के नमक और चीनी हिसाब से मार्केट इसलिए खाने में इन में मिलने तीनों का संतुलन जरूरी है।

वजन न बढ़ने दें

बच्चों में आजकल मोटापे की समस्या बहुत ज्यादा हो रही है। मोटापे

बच्चों में शुरू से डालें ये 5 आदतें, कभी नहीं होगी दिल की बीमारी



भी आप स्मार्टली हेल्दी तरीके से बना सकती हैं। फल और सब्जियां खूब खिलाएं। रोजाना सुबह चार बादाम और एक ग्लास दूध आपके लाडले को दिन भर एनर्जी और पोषण भी देगे और इससे बच्चों की मेमोरी पावर भी अच्छी हो जाएगी। दिल के लिए सबसे घातक होता है

की वजह से कई तरह के गंभीर रोगों की आशंका बढ़ जाती है। इसलिए बचपन से ही बच्चों को मोटापे से दूर रखें। अगर बच्चे रेगुलर एक्सरसाइज करेंगे और हेल्दी डाइट लेंगे, तो उनका वजन कंट्रोल रहेगा और बॉडी फिट रहेगी। इससे उनका विकास यानि शरीर की लंबाई, चौड़ाई और मजबूती भी अच्छी रहेगी। वजन कंट्रोल करने में नियम का पालन बहुत जरूरी है। पूरे परिवार के खाने का समय और सोने का समय तय कर दीजिए। अनियमित जीवन के कारण कई बार हेल्दी चीजें खाने के बावजूद आप बीमार पड़ सकते हैं। बलड प्रेशर पर नजर रखें

का इस्तेमाल भी कर सकती हैं।

स्टेप-4

इसके बाद प्युमिस स्टोन की मदद से कोहनी, घुटने, एड़ियों और शरीर के सख्त हिस्से को साफ करें। शरीर के बाकी हिस्सों को चेहरे को हाथ से रगड़ कर साफ कर लें।

स्टेप-5

5-10 मिनट बाद गुनगुने पानी से शॉवर ले लें। शॉवर लेने के बाद मॉइश्चराइजिंग क्रीम लगाएं। बॉडी पॉलिशिंग करने के करीब 2-3 दिन तक नहाते समय साबुन का इस्तेमाल न करें।

एक्यूप्रेशर प्वाइंट्स दबाएं

और हर बीमारी का समाधान पाएं

पैरों के एक्यूप्रेशर प्वाइंट्स : शरीर में कई ऐसे प्रेशर प्वाइंट्स होते हैं, जिनका कनेक्शन शरीर के दूसरे भागों से होता है। हाथों-पैरों के इन प्वाइंट्स को दबाकर रोगों का इलाज किया जा सकता है। पैरों के इन प्वाइंट्स को रोज 10 या 15 मिनट तक दबाकर कई बीमारियों से राहत पाई जा सकती है। पैरों के इन एक्यूप्रेशर प्वाइंट्स को अच्छी तरह और सही तरीके से दबाकर आप मांसपेशियों की ऐंठन या

जकड़न, ब्लोटिंग, अपच, भूख जकड़न, ब्लोटिंग, अपच, भूख से संबंधित समस्या को दूर कर सकते हैं। आज हम आपको बताएंगे कि पैरों के नीचे मौजूद किन एक्यूप्रेशर प्वाइंट्स को दबाकर आप बीमारियों से ही होता है। बलड प्रेशर पर नजर रखने के लिए इसे रेगुलर बेसिस पर चेक करते रहना जरूरी है। बलड प्रेशर बताता है कि आपके दिल को आपके शरीर के लिए बलड पंप करने में कोई परेशानी तो नहीं हो रही है।



लॉकडाउन में दीपिका का वर्क फ्रॉम होम

देश दो महीने से भी अधिक समय से लॉकडाउन में है और ऐसे में पूरी फिल्म इंडस्ट्री भी ठप पड़ गई है। ज्यादातर लोग घर से काम कर रहे हैं और दीपिका पादुकोण का नाम भी इस सूची में शामिल है। एक्ट्रेस इन दिनों स्क्रिप्ट्स के ऑनलाइन नरेशन में अपना वक्त बिता रही हैं। दीपिका एक कलाकार होने के नाते, इस समय का सदुपयोग कर रही हैं और ऐसे समय में फिल्म निर्माताओं के साथ वर्चुअल मीटिंग कर रही हैं। दीपिका के लिए यह ऑनलाइन नरेशन बातचीत का नया डिजिटल तरीका है। एक्ट्रेस अपने उन प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हैं जो पहले से ही घोषित हो चुके हैं। अपने अगले प्रोजेक्ट को पूरा करने और दुनिया भर में अपने फैस के लिए अधिक यादगार किरदार बनाने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से नई स्क्रिप्ट भी सुन रही हैं। अगर यह लॉकडाउन नहीं होता, तो दीपिका वर्तमान में शकुन बत्रा की अनटाइटल्ड फिल्म की शूटिंग के लिए श्रीलंका में होतीं। इसमें अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी और अनन्या पांडे को भी कास्ट किया गया है। अब तक के अपने सफर में दीपिका ने हमें कई शानदार फिल्मों और किरदार दिए हैं। इनमें पीकू, ये जवानी है दीवानी, बाजीराव मस्तानी, कॉकटेल, छपाक आदि उनके करियर की कुछ चुनिंदा फिल्मों हैं। इन फिल्मों ने हमारे दिलों में खास जगह बनाई है। एक्ट्रेस के काफी फैन फॉलोइंग हैं और इस समय वे अपने करियर ग्राफ का लुत्फ उठा रही हैं। हर फिल्म के कैरेक्टर में उनकी एक्टिंग सराहनीय है। उनकी लेटेस्ट रिलीज में छपाक मूवी शामिल है, जिसके क्राटिकली काफी अच्छे रिव्यू मिले।



रूस में प्रभास की 'बाहुबली 2' ने मचाई धूम



साउथ स्टार प्रभास की 'बाहुबली' फ्रैंचाइजी पूरी दुनिया के सामने इंडियन और साउथ सिनेमा का नाम रोशन कर चुकी है। 'बाहुबली 2' ने बॉक्स ऑफिस के सारे रेकॉर्ड्स तोड़ चुकी है। फिल्म अभी तक लोगों के बीच जबरदस्त पॉप्युलर है और बीते दिनों यह रूस के चैनल पर दिखाई गई। इस खबर को एम्बेसी ऑफ द रशियन फेडरेशन के ऑफिशल अकाउंट से शेयर किया गया। एसएस राजामौली की फिल्म 'बाहुबली: द कनक्लूजन' को भारतीय सिनेमा के इतिहास की बेस्ट फिल्मों में से एक में गिना

जाता है। यह फिल्म भारत ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी काफी पॉप्युलर है। बीते 28 मई को रशिया इन इंडिया (रशियन एम्बेसी) ने ट्वीट किया... भारतीय सिनेमा रशिया में लोकप्रिय हो रहा है। देखिए रशियन टीवी इस वक्त क्या चला रहा है: रशियन वॉइसओवर के साथ बाहुबली। 'बाहुबली' सीरीज 250 करोड़ के बड़े बजट पर बनी फिल्म है और इसने दुनियाभर में 1800 रुपये की कमाई की है।

अब हॉरर फिल्म 'छोरी' में नजर आएंगी नुसरत भरुचा

एक्ट्रेस नुसरत भरुचा रोम-कॉम जॉनर से अभी तक लोगों का मनोरंजन करती रही हैं। अब वह हॉरर फिल्म से फैस को डराने आ रही हैं। नुसरत ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से अपने नए प्रोजेक्ट की घोषणा की है। इसको लेकर उनके फैस काफी एक्साइटेड हैं। नुसरत भरुचा को आखिरी बार आयुष्मान खुराना के साथ 'ड्रीम गर्ल' में देखा गया था। अब वह 'छोरी' फिल्म में लीड रोल में नजर आएंगी। यह फिल्म अवॉर्ड विनिंग मराठी फिल्म 'लापाछपी' का रीमेक है। अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से नुसरत ने लिखा, अपनी अगली फिल्म 'छोरी' का अनाउंसमेंट करके रोमांचित हूँ। कुछ चौंकाने वाला और डरावना आपके सामने आने वाला है। 2017 में यह फिल्म चर्चा में आई थी। इसमें कुछ पुरानी मान्यताएं दिखाई गई हैं, जिनकी कहानी काफी डरावनी है। फिल्म डरावनी होने के साथ इमोशनल भी है। फिल्म 'छोरी' की स्क्रिप्ट विशाल कपूर ने लिखी है, उन्होंने ही ओरिजिनल फिल्म लिखी थी। हिंदी रीमेक को विशाल फुरिया डायरेक्ट करेंगे उन्होंने ही 'लापाछपी' को डायरेक्ट किया था।

